□□□□□□□□□ □□□□□

जनसत्ता 11 अगस्त, 2014 : बरसों पहले □कदफेहदिुस्तान की □कवख्यिात वदिुषी केसाथ खाने की मेज पर गपशप करते वक्त मुझे जोर का झटका लगा था□

बातचीत केबीच मेरे मुंह से नकिला कि मैं हदिी और अंगरेजी दोनों भाषाओं में लखिता हूं□ इस पर वदिुषी की राय थी कि शैक्षणकिलहिाज से हदिी में लखिना ठीकहै□ मैंने तपाकसे कहा कि मैं तो अपने कुछ लेख मूल रूप से हदिी में ही लखिता हूं, उन्होंने मुझे वसि्फारति आंखों से देखा और अचरज से बोलीं कि'हदिी या तमलि जैसी भाषा□ गली-मुहल्ले की बातचीत केलि□ ठीकहै लेकनि इन भाषाओं में वैसा गंभीर चतिन नहीं कयिा जा सक्ता जैसा कि फ्रेंच या अंगरेजी में□' जाहरि है, इतना सुनने केबाद उनकेसाथ भोजन का स्वाद मेरे लि□ थो□ा कि□वा हो गया□

मेरे मन केकसिी कोने में यह बातचीत अभी तकबैठी रह गई है क्योंकि अंगरेजी भाषा में लखिने-प□ने वाले ज्यादातर लोग जसि चीज को स्वयंसद्धि मान कर चलते हैं वह इस बातचीत में □कझटकेमें उजागर हो गई थी□ भारतीय भाषाओं को हीन समझा जाता है, और इसी तर्कसे उन लोगों को भी हीन माना जाता है जो इन भाषाओं में लखिते-प□ते और बोलते हैं□ नस्ली और लैंगकिगैर-बराबरी की तरह भाषागत भेदभाव भी कुछ इतना जाहरि और आमफहम है कि हम इसे सहज मान लेते हैं□

यूपी□ससी की सविलि सेवा परीक्षा केसीसैट पर्चे को लेकर उठे ववािद केमूल में है भाषाई गैर-बराबरी का सवाल□ पछिले डे□ महीने से और खासतौर पर पछिले हफ्ते भर में इस ववािद पर आई प्रतक्रियिाओं से भाषाई भेदभाव की इस जानी-पहचानी राजनीतकि पुष्टहिोती है□ बनिा प्रदर्शनकारियों की मांगों को समझे, बनिा तथ्यों की जांच की□ अंगरेजी का मीडयिा सीसैट-वरिोधी आंदोलन पर पलि प□ा है□ उधर जनप्रतनिधियिों को शर्माशर्मी इस सवाल पर बोलने को मजबूर होना प□ रहा है□ ववािद को अंगरेजी बनाम हदिी और हदिी बनाम अन्य भारतीय भाषाओं केफंदे में फंसाने की कोशशि हो रही है□ सत्ताधारी दल केनेता घ□ियाली आंसू बहा रहे हैं लेकनि सरकार राज्यसत्ता केचरत्रि केअनुरूप आचरण कर रही है□ सीसैट ववािद पर हुई सरकारी घोषणा से लग सक्ता है कि चलो आखरि सरकार ने प्रदर्शनकारियों केवरिोध की सुध तो ली, लेकनि अगर यह सुध लेना है तो फरि बेसुध होना कसिे कहते है? सरकार ने प्रदर्शनकारियों को राहत केतौर पर वह दयिा है जो उन्होंने मांगा ही नहीं था□ प्रदर्शनकारी यह थो□ ही मांग कर रहे हैं कि सीसैट केपर्चे में पूछी गई अंगरेजी केअंकों की गणना मेरटि लस्टि में आप न करें!

सीसैट केवरिोधी युवाओं में असल मुद्दों को लेकर वचिारों की स्पष्टता कहीं ज्यादा है, हालांकि बात को और भी ज्यादा धारदार बना कर रखा जा सक्ता था□ वरिोध □प्टीट्यूड टेस्ट को लेकर कत्तई नहीं है, हालांकि सीसैट केवरिोधयिों में से कुछ की बातों से ऐसा लग सक्ता है□ कसिी नौकरी केलि□ कोई उम्मीदवार कतिना उपयुक्त है- इसे जांचने केलि□ पूरी दुनयिा में □प्टीट्यूड टेस्ट का उपयोग □कमानकेरूप में कयिा जाता है□ हां, इस बात पर बहस जरूर हो सक्ती है कि किसी प्रशासकेलि□ आवश्यकयोग्यताओं में कनि-कनि बातों को कसि मात्रा में शामलि कयिा जाय□ ठीकइसी तरह मानवकि बनाम वज्ञिान के ववािद में कुछ दम तो है जरूर लेकनि यह भी मुद्दे की मुख्य बात नहीं है□ यह बात सच है कि जो छात्र इंजीनयिरगि और मैनेजमेंट की प□ाई से जु□ है वे बाकयिों की तुलना में इधर कई साल से सविलि सेवा परीक्षा में अच्छा परणिाम ला रहे हैं□ हो सक्ता है, ऐसे उम्मीदवार जसि तरह केपरीक्षा पैटर्न से

परचिति है वह सविलि सेवा परीक्षा को पार करने के मामले में उनके लिए तनकि मददगार साबति होता हो।

सीसैट को लेकर उमड़ा वरिोध न तो हदिी की तरफदारी में है और न ही अंगरेजी की मुखालफत में। प्रदर्शनकारयिों ने जोर-शोर से कहा है कि वे हदिी की हमिायत में यह सब नहीं कर रहे बल्कि उनका संघर्ष सभी भारतीय भाषाओं का पक्षधर है। प्रदर्शनकारयिों ने बार-बार कहा है कि वे अंगरेजी के वरिोध में नहीं हैं। अंगरेजी भाषा संबंधी योग्यता की जांच वाले पर्चे का वे वरिोध नहीं कर रहे। अंगरेजी मीडयिा यह बात समझ ही नहीं पा रहा कि हदिी-हमिायती या फरि अंगरेजी-वरिोधी हुए बगैर भी कोई भाषाई गैर-बराबरी के सवाल को उठा सकता है।

यह वरिोध-प्रदर्शन अंगरेजी के खलिाफ नहीं बल्कि अंगरेजी के दबदबे के खलिाफ है। राष्ट्र की सारी प्रतभिा अंगरेजीभाषी एक छोटे-से समूह के अंदर ही वरिाजती है- यह वरिोध-प्रदर्शन इस धारणा के खलिाफ है। यह हदिी की हमिायत का नहीं बल्कि अंगरेजी के बरक्स बाकी भारतीय भाषाओं को होड़ के लिए बराबर की जमीन दलिाने की लड़ाई है। सीसैट के पर्चे के खलिाफ इस सीधे-सादे मगर तूल पकड़ते वरिोध-प्रदर्शन की जड़ में है इस देश में अनौपचारकि रूप से जारी वह भाषाई भेदभाव जो कसिी रंगभेद से कतई कम नहीं।

बात यह है कि सीसैट बड़ा चुप्पा ढंग से अंगरेजी को बुलंद बनाता है। एप्टीट्यूड टेस्ट के भीतर नश्चिति ही भाषाई योग्यता-क्षमता की जांच होनी चाहिए। लेकनि क्या इस बात का भी कोई तुक है कि भाषाई योग्यता-क्षमता की जांच सरि्फ अंगरेजी भाषा में हो? सीसैट में फलिहाल यही व्यवस्था है। यह अलग बात है कि सीसैट में भाषाई योग्यता की जांच के लिए पूछी जाने वाली अंगरेजी दसवीं-बारहवीं के स्तर की होती है। यहां मुद्दे की बात यह है कि एप्टीट्यूड टेस्ट में भाषाई योग्यता की जांच के लिए कसिी भारतीय भाषा पर वचिार तक नहीं कयिा गया है। सीसैट के प्रश्नपत्र में प्रस्तुत अनुवाद को लेकर उठा हंगामा बेजा नहीं है। इससे साबति होता है कि एप्टीट्यूड की जांच भाषा-नरिपेक्ष नहीं है।

प्रदर्शनकारी ठीक ही नाराज हैं कि उनके साथ सविलि सेवा की परीक्षा में दोयम दर्जे के परीक्षार्थी की तरह बरताव कयिा जा रहा है। अंगरेजी माध्यम से परीक्षा देने वाले परीक्षार्थयिों का दर्जा कुछ वैसा ही है जैसा कि घरेलू मैदान पर खेलने वाली टीम या फरि टेनसि या बैडमटिन में वरीयता प्राप्त खलिाड़यिों का होता है, जबकि भारतीय भाषाओं के माध्यम से परीक्षा देने वाले उम्मीदवारों को प्रतीक्षा करनी होती है कि काश, कोई करशि्मा होता और वाइल्डकार्ड एंट्री मलि जाती। सीसैट के वरिोध में प्रदर्शन करने वाले उस अन्यायी शक्त‌ि-समीकरण से जूझ रहे हैं जसि वस्तुनष्ठि यानी भेदभाव से परे मानी जाने वाली परीक्षा-पद्धत‌ि के भीतर ही गूंथ दयिा गया है।

आंकड़े इस आशंका को पुष्ट करते हैं। बीते तीन दशकों में भारतीय भाषा के उम्मीदवारों की संख्या सविलि सेवा में बढ़ी थी और आभजिात्य मानी जाने वाली इस सेवा के दरवाजे साधारण सामाजकि पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए खुले थे। सविलि सेवा परीक्षा की नई पद्धत‌ि साल 2011 में शुरूहुई और इस शुरुआत के साथ बीते तीन दशकों का रुझान उलट गया। 2008-10 के बीच भारतीय भाषाओं को माध्यम बना कर सविलि सेवा की मुख्य परीक्षा में बैठने वाले उम्मीदवारों की संख्या चौवालीस प्रतशित थी जो 2011-12 में घट कर महज अठारह प्रतशित रह गई। हालांकि 2013 के लिए औपचारकि तौर पर आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं तो भी कहा जा सकता है कि सविलि सेवा परीक्षा के लिए भारतीय भाषाओं को माध्यम बनाने वाले उम्मीदवारों की स्थति‌ि पहले की तुलना में बदतर ही हुई है। खबरों के मुताबकि अंतमि रूप से चयनति उम्मीदवारों में हदिी माध्यम के उम्मीदवारों की संख्या तीन प्रतशित रह गई है जबकि 2009 में यह संख्या पच्चीस प्रतशित थी।

दरअसल, सीसैट का पर्चा या फरि सविलि सेवा परीक्षा तो एक बड़ी सच्चाई का सरिा भर है। उच्च शक्षिा की पूरी प्रणाली भारतीय भाषाओं को पढ़ाई और परीक्षा का माध्यम बना कर स्कूली शक्षिा पूरी करने वाले वदि्यार्थयिों के वरिोध में खड़ी है। देश में उच्च अध्ययन के नामी-गरिामी संस्थानों में

प्रवेश के लि□ उन्हें आनन-फानन में अंगरेजी अपनानी प□ती है□ समाज विज्ञान और मानविकी के विषयों की प□ाई वाले छात्रों के लि□ यह कोशिश कुछ इतनी कठिन साबित होती है कि बहुधा छात्र इस आजमाइश में ही नहीं प□ते□ अगर संस्थान □क या □क से अधिक भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने की अनुमति देने वाला हुआ तो भी हर कदम पर बाधा□ं ख□ी मिलती हैं: पाठ्यक्रम और उनमें दर्ज जरूरी किताबें अंगरेजी में होती हैं, प्रश्नपत्र भले ही ‘ज्ञानी गूगल जी’ के सहारे अन्य भाषाओं में अनूदित करवा लिया जाय लेकिन शायद ही कोई परीक्षक इन भारतीय भाषाओं का जानकार मिलता है□ भारतीय भाषा को प□ाई का माध्यम बनाने वाले छात्र अपेक्षाकृत कमतर माने जाने वाले संस्थानों में दाखिला ले पाते हैं या फिर बेहतर संस्थानों के भीतर कमतर दर्जे के अकादमिक पद को हासिल कर पाते हैं□ उन्हें हर वक्त धारा के विरुद्ध तैरना प□ता है□ सिविल सेवा परीक्षा के खिलाफ होने वाला प्रदर्शन उस पूरी व्यवस्था के खिलाफ प्रदर्शन है जो भारतीय भाषाओं में प□ाई-लिखाई करने वाले के विरुद्ध ख□ी है□

सरकार के अल्पकालिक बेबसी के तर्क झूठे हैं□ अगर सरकार समस्या को लेकर गंभीर है तो तीन घोषणा□ं तुरंत कर सकती है□ □क, प्रारंभिक परीक्षा की तारीख को कुछ हफ्तों के लि□ आगे खिसका दिया जाय ताकि पिछले छह हफ्तों से अनिश्चय से जूझ रहे परीक्षार्थियों को तनिक तैयारी का समय मिले□ दो, कम से कम इस साल के लि□ सीसैट परीक्षा के अंकों को मेरिट के लि□ जो□ना नहीं चाहि□, इस पर्चे को पास करने के लि□ न्यूनतम जरूरी अंक को तय कर दिया जाय और जो इतने अंक ला□ उसे इस पर्चे में पास माना जाय□ तीन, सरकार इस हकीकत को स्वीकार करे कि सिविल सेवा परीक्षा भाषा-निरपेक्ष नहीं है, वह भेदभाव करती है और अगले साल तक इस भाषाई भेदभाव को खत्म करने के लि□ सरकार □क नई व्यवस्था बनाने का आश्वासन दे□

सीसैट विरोधी आंदोलन भाषाई भेदभाव के खिलाफ उपजे आक्रोश का आंदोलन है□ इसी वजह से मैं इस विरोध-प्रदर्शन को देख कर खुश हूं और उसे सलाम भेजता हूं□ विरोध-प्रदर्शन अगर मुख्य मुद्दे से न भटके, सिविल सेवा परीक्षा देने का □क और अतिरिक्त मौका जैसे फुसलावनों या फिर सत्ताधारी पार्टी और उसके □जेंटों के फंस-फंदों में न उलझे तो फिर यह विरोध-प्रदर्शन देसी भाषाओं के खिलाफ जारी रंगभेदी बरताव के असर को □क हद तक कम करने की दिशा में ब□ा कदम साबित हो सकता है□ और हां, □क बात यह भी कि ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते!

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta